सगोत्रीय विवाह और अंतःप्रजनन

स्रोत: द हिंदू

आंध्र प्रदेश के **उप्पाडा तट के गाँवों** में सगोत्रीय विवाहों के कारण सेरिब्रल पाल्सी (मस्तिष्क विकार), **डेंडी-वाकर मालफॉर्मेशन (DWM),** ऐल्बिनिज़्म (रंगहीनता) और अन्य विकार उत्पन्न हो रहे हैं।

- सगोत्रीय विवाह (रक्त-संबंधी विवाह) का आशय **रक्त संबंधियों (जैसे एक-दूसरे के रिश्तेदार,** आमतौर पर चचेरे भाई या करीबी रिश्तेदार) के बीच होने वाले विवाह से है।
  - **यह अनाचारपूर्ण विवाहों (Incestuous Marriages) जैसे- प्रत्यक्ष वंशजों (**पिता और पुत्री, माता और पुत्र, भाई और बहन के बीच विवाह) के बीच होने वाले विवाह से भिन्न है।
- **'वोनी' प्रॉमिस** जैसी प्रथाएँ (जो कि लड़की के जन्म के समय किया जाने वाला एक **मौखिक समझौता है) उपरोक्त मामले में रक्त-संबंध** को बढ़ावा देती हैं।
- **अंतःप्रजनन, रक्त-संबंधी विवाह का आनुवंशिक परिणाम** है। अंतःप्रजनन से **संतान** में **समयुग्मता** की संभावना बढ़ने के साथ **अप्रभावी लक्षणों** की अभिव्यक्ति भी होती है।
  - **होमोज़ायगोसिटी के मामले में** किसी व्यक्ति को अपने माता-पिता दोनों से एक विशेष जीन के लिये **समान एलील विरासत में मिलते हैं, जिसके कारण** आनुवंशिक विकार होते हैं।
    - **एलील (Alleles) एक ही जीन के विभिन्न संस्करण** होते हैं। उदाहरण के लिये आँखों के रंग के जीन में **नीली, भूरी या हरी आँखों के लिये एलील** हो सकते हैं।
- अंतःप्रजनन से **आनुवंशिक विकार में वृद्धि** होती है। आनुवंशिक विकार से आशय लोगों में कुछ **हानिकारक या अतिरिक्त जीनों** की उपस्थिति के कारण होने वाले विकार से है।
- हिंदू विवाह अधिनियम **के तहत हिंदुओं** के बीच सपिंड विवाह पर प्रतिबंध (जब तक कि कोई **स्थापित प्रथा न हो)** लगाया गया है।
  - सपिंड **विवाह का** आशय **पारिवारिक रूप से निकटता से संबंधित लोगों** के बीच होने वाले विवाह से है।

और पढ़ें: दुर्लभ रोग दिवस 2024

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/consanguinity-marriage-and-inbreeding